अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर 2023 संयुक्तांक

अंक-4, मुंबई. मूल्य रू.20/-

पर दे के पी छे

सिनेमा...रंगमंच...सीरियल...वेब सीरीज के कलाकारों को समर्पित

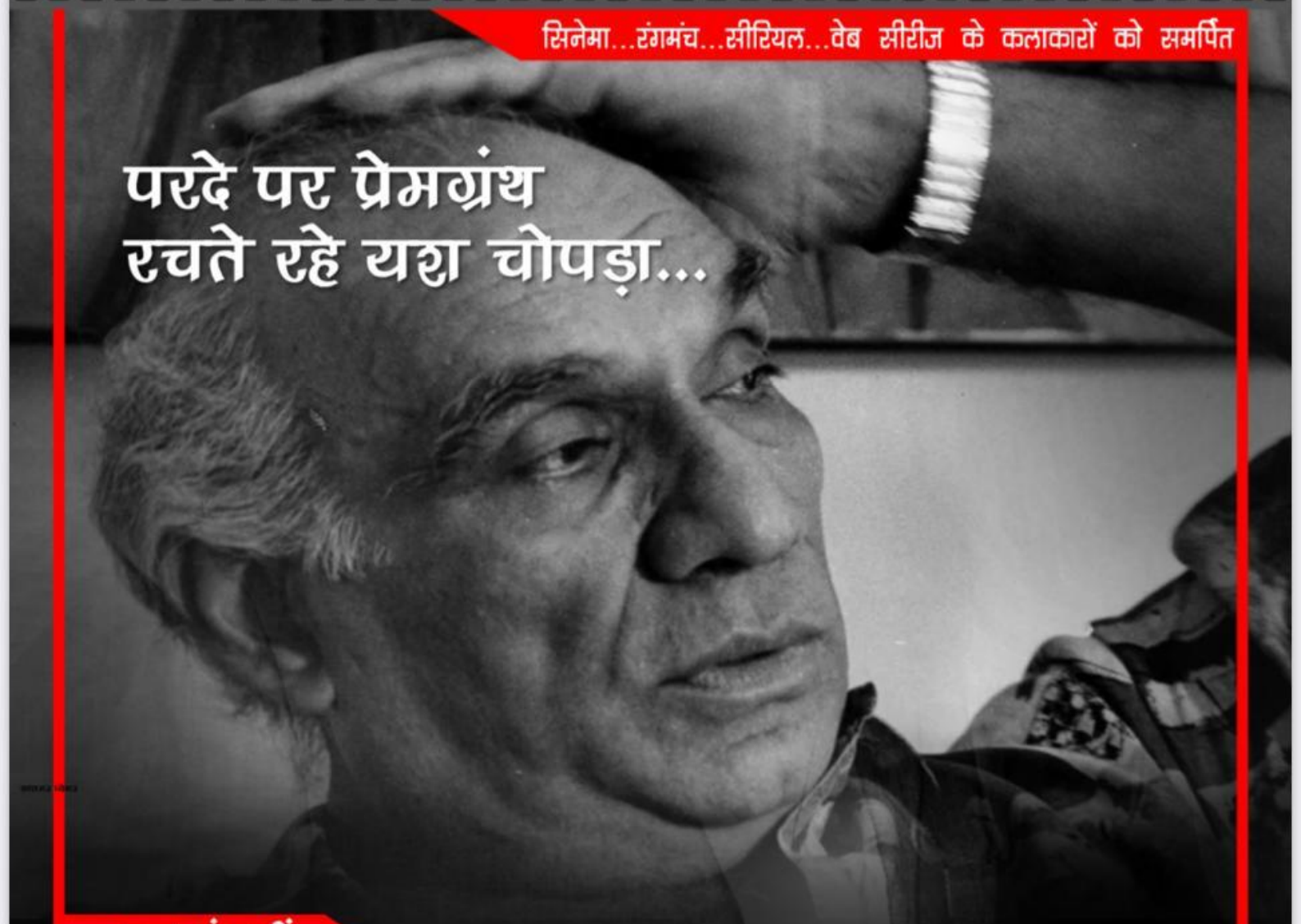

परदे पर प्रेमग्रंथ रचते रहे यश चोपड़ा...

इस अंक में

वहीदा रहमान : खूबसूरती और अदाकारी की बेहतरीन मिसाल

केबीसी : छोटे परदे पर सदी के महानायक का जलवा

बच्चों के लिये अब फिल्में नहीं हैं

श्रद्धांजलि... अलविदा नितिन दादा

मील का पत्थर : सिर्फ मैं हूं.. मैं हूं उर्फ गाईड

रंगमंच : दो नये नाटक

मुलाकातें... रमेश नोहाटे, राम बहादुर रेणू, आदित्य रानोलिया

समीक्षा : मिशन रानीगंज

जरूरी किताबें...

अपनों का साथ मिल जाये तो जग भी छोटा लगने लगता है: आदित्य रानोलिया

आदित्य रानोलिया एक निर्माता-निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म **"द लॉस्ट गर्ल"** को लेकर बेहद उत्साहित हैं।उनकी यह महत्वाकांक्षी फिल्म रिलीज के लिये तैयार है। इस मुकाम तक पहुंचने के लिये उन्होंने बहुत संघर्ष किया है। पिछले दिनों उनके गोरेगांव स्थित कार्यालय में उनसे उनके संघर्ष और कैरियर को लेकर लंबी बातचीत हुई। पूछे गये सवालों की सूची के अनुसार उन्होंने अपने उत्तर प्रस्तुत किये।

*** आपने सिनेमा जैसी विधा से जुड़ने का निर्णय कब और क्यों लिया?**

-कोई भी सफर किसी मकसद से ही शुरू होता है। आपको हमेशा आपका लगाव ही आपके कैरियर की तरफ खींचकर लाता है। सिनेमा समाज के लिए एक दर्पण होता है। बचपन से ही सृजनात्मक गतिविधियों में मेरी रुचि थी। मैं कार्टून बहुत अच्छे से स्कैच करता था। मैंने सोचा अपनी इस कला का इस्तेमाल अपना कैरियर शुरू करने के लिए करना चाहिए। इसी क्रम में मैंने हिन्दी अखबार **दैनिक जागरण** में कार्टूनिस्ट के रूप में काम करना शुरू किया। वहां दो-तीन वर्ष कार्टून, कैरिकेचर बनाने के बाद मुझे यह लगा कि इसके अलावा भी मुझे और भी बहुत कुछ करना है जिससे मेरी प्रतिभा को एक अलग पहचान मिल सके। मेरे अर्न्तमन में सिनेमा का जो आकर्षण था वे मुझे इस क्षेत्र में कुछ करने के लिए हमेशा पुकारता था। मैं दैनिक जागरण की अपनी नौकरी छोड़कर दिल्ली आ गया और यहाँ फिल्म मेकिंग की बारीकियों को सीखने के लिए कुछ मीडिया हाउस में काम किया। मीडिया हाउस में काम करते हुए मुझे यहां और आगे बढ़ने की संभावनाएं नज़र नहीं आई। लिहाजा फिल्म मेकिंग को अपनी कर्मभूमि बनाने के लिए मुंबई आ गया। यहाँ कुछ साल स्ट्रगल करने के बाद मैंने अपनी ही एक कंपनी एडमेक इंडिया मीडिया प्राईवेट लिमिटेड की शुरुआत की। जिसने न केवल मुझे रोजगार का आधार प्रदान दिया बल्कि साथ-साथ 50 अन्य लोगो को भी रोजगार के अवसर दिये। हमारी कंपनी लगातार सक्रिय है। वास्तव में मुंबई कला का समंदर है जो अपने अंदर सभी कलाकारों को समा लेती है। मुंबई आपसे काम करने का हौसला और काम के लिए पूर्ण समर्पण मांगती है। मुझे पता था कि मेरी राह इतनी आसान नहीं है पर कहीं न कहीं यह आत्मविश्वास भी प्रबल था कि जीवन में कुछ अनोखा इस शहर में हासिल करना ही है।

*** अभिनय, निर्देशन या लेखन? आपकी इन तीनों में सबसे ज्यादा दिलचस्पी किस विधा में थी?**

-पढ़ाई के शुरूआती दिनों में क्रिएटिव कामों में काफी सक्रिय रहता था। मैंने बीएससी की पढ़ाई करने के बाद अपनी क्रिएटिविटी का दायरा विशाल करने के उद्देश्य से मॉस कम्युनिकेशन की पढ़ाई की। मास कम्युनिकेशन की शिक्षा के दौरान मैंने क्रिएटिविटी के विविध आयामों को बहुत बारीकी से सीखा। अंतत: फिल्म मेकिंग को अपनी कर्मभूमि बनाने के लिए मुंबई आ गया। मुझे पता था कि मेरी राह इतनी आसान नहीं है पर कहीं न कहीं यह आत्मविश्वास भी था कि जीवन में कुछ हासिल करना ही है। इस क्रियेटिव यात्रा में अभिनय, निर्देशन और लेखन, ये सब कहीं न कहीं मुझसे जुड़े हुए थे।

*** आर्ट डायरेक्शन की तरफ कब और कैसे आकर्षित हुए?**

- मुंबई आने के बाद फिल्म मेकिंग के प्रति मेरी रुचि बढ़ी। फिल्म मेकिंग के मकसद से ही मैं यहां आया था।अपने कैरियर के एक पड़ाव में मुझे सेट डिजाइनिंग का काम करना पड़ा। वर्ष 2007 में अपनी कंपनी (एडमेक इंडिया मीडिया प्राइवेट लिमिटेड) शुरु कर चुका था। इस कंपनी के बैनर तले मैंने मुंबई के नामी-गिरामी यशराज फिल्म, धर्मा प्रोडक्शन, रेड चिलीज, करन जौहर, राजकुमार हिरानी, नाडियाडवाला, अमीर खान प्रोडक्शन और पैनारोमा जैसे फिल्म प्रोडक्शन हाउसों के साथ बड़ी-बड़ी फिल्मों में काम किया। उनके साथ काम करके मेरी दिलचस्पी निर्देशन की तरफ बढ़ने लगी। सेटडिजाइनिंग में मुझे अपनी प्रतिभा दिखाने और अपनी कलात्मकता दिखाने के लिए बड़ा कैनवास मिला। बड़े निर्देशकों ने मेरे काम को स्वीकारा और अपनी फिल्मों के लिए मौका दिया। मुझे एक अच्छी पहचान मिली और यहीं से मेरी आर्ट डायरेक्शन की शुरुआत हुई।

*** इसका अर्थ यह है कि आप कभी किसी के सहायक नहीं रहे ।**

- जी हां। मैं कभी किसी का सहायक नहीं रहा। अपने अनुभव से ही सब कुछ सीखने की कोशिश की। मैं अगर निर्देशन की भी बात करू मैं यही कहूंगा की फिल्मे देखते-देखते ही बड़ा हुआ हूं। फिल्मों का प्रभाव और फिर उस सिनेमा को बारीकियों से समझाना मेरे लिए एक चैलेंज बन गया, जो मैंने खुद के प्रयास और अनुभव से पूरा किया। मुंबई आने के बाद मेरे सामने नित नई चुनौतियां थी। सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि मुंबई से वापस नहीं जाना है। ऐसा कहा जाता है कि मुंबई आने के बाद चार-पांच वर्षों तक आपने स्ट्रगल नहीं किया तो यह शहर आपको नकार देगा। सबसे पहले मुंबई में मेरे लिए रोजी-रोटी का स्ट्रगल था। काफी भटकने के बाद एकता कपूर के एक प्रोजेक्ट में मुझे काम मिला **कसम से** सीरियल में वह भी सिर्फ एक दिन के लिए सहायक निर्देशक के रूप में। यह काम मेरे कैरियर के लिए एक नन्हा पौधा था। यह एक दिन मेरे लिए एक साल के बराबर था। यही एक दिन का काम मुंबई में मेरे कैरियर का आधार बना। इस एक दिन के काम की खुशी मेरे लिए हमेशा यादगार रहेगी। इस एक दिन के काम में मैंने फिल्म इंडस्ट्री का कल्चर देखा जिससे मेरे काम को एक सही दिशा मिली।

*** पहली फिल्म द लॉस्ट गर्ल की शुरुआत किस प्रकार हुई ?**

-मानवीय स्वाभाव ऐसा होता है कि जब भी हम समाज में किसी घटना-दुर्घटना को सुनते है या देखते है तो हम भावुक हो जाते है। ऐसी ही एक दुखांतक घटना 1984 के सिख दंगे की घटना थी, जिसने न केवल देश को बल्कि पूरी इंसानियत को अंदर से हिला दिया।

इतिहास में कुछ घटनाये ऐसी होती है जो अपने न मिटनेवाले निशान छोड़ देती है। 1984 के दंगो ने मानव जीवन को हिला डाला। इस घटना के बारे में बचपन से सुनता आया था। इसकी पीड़ा मेरे अंतर्मन में थी। यह एक घाव कुरेदने जैसा था। मैंने उन मार्मिक घटनाओं पर आधारित **द लॉस्ट गर्ल** लिख डाली। मुझे हमेशा यह लगता है कि मार्मिक घटनाओं के दर्द को सिनेमा के माध्यम से लोगों को दिखा सकूं। जिसमे समाज के लिए एक सकारात्मक सन्देश भी हो। **द लॉस्ट गर्ल** बनाने के शुरूवात इसी सोच के साथ हुई।

*** फिल्म निर्देशक के तौर पर आपने अब तक कितनी फिल्में की है ?**

– फिल्म मेकिंग मेरे कैरियर का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। निर्माता-निर्देशक के तौर पर **द लॉस्ट गर्ल** मेरी पहली फिल्म है। वर्ष 2019 में मैंने द लॉस्ट गर्ल लिखी और 2021 के आते-आते इसका निर्माण और निर्देशन शुरू कर दिया। 3 साल की कड़ी मेहनत के बाद लगभग यह फिल्म पूरी हुई। 3 साल इस प्रोजेक्ट को बनाने में लगे. इसके बाद में आगामी एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहा हूं, जो की अगले वर्ष शुरू होगी।

*** द लॉस्ट गर्ल" के बारे में कुछ बतायें ?**

–द लॉस्ट गर्ल की कहानी 1984 में हुए दंगों पर केन्द्रित है। इसमें हमने एक बच्ची की कहानी को दर्शाया है। जिसका परिवार दंगों का शिकार हो जाता है और वह अकेले रह जाती है। उस लड़की के जीवन की तमाम कठिनाईयां और उसके जीवन में होनेवाली घटनाओं के साथ उस लड़की के हार न माननेवाले स्वभाव और उसके मकसद के बारे में इस फिल्म में दिखाया गया है।

*** आदित्य जी, फिल्म एक सशक्त माध्यम है। इस माध्यम का उपयोग करते हुये समाज को कैसा संदेश देना चाहेंगे ?**

– सिनेमा में मेरी बचपन से ही रुचि थी, मेरी यह कोशिश होगी कि अपनी फिल्मों के माध्यम से समाज को एक अच्छा मैसेज दे सकूं और सिनेमा जैसे सशक्त माध्यम को सार्थक कर सकूं।

*** भविष्य किस रूप में देखना पसंद करेंगे ? निर्देशक या कला निर्देशक ?**

– स्वाभाविक रूप से मैं खुद को एक निर्देशक के रूप में स्थापित करने की पूरी कोशिश करूंगा। मेरी दिली ख्वाहिश है कि अपनी आनेवाली फिल्मों द्वारा समाज को मेसेज और युवाओं में प्रेरणा जगा पाऊं।

*** इसका अर्थ यह है कि इस क्षेत्र में आने के लिये परिवार का पूरा सहयोग मिला। जो आमतौर पर बहुत कम लोगों को मिलता है ।**

– यह मेरा सौभाग्य है कि माता-पिता का आशीर्वाद और उनका प्यार मैं अपनी सफलता का सबसे बड़ा कारण मानता हूं। मातापिता ही वो शक्ति है जो अपने बच्चो के लिए सब कुछ दांव पर लगा देते है, अपनी सफलता का श्रेय मैं अपने माता-पिता को देना चाहूंगा जिन्होंने मेरी काबिलियत पर भरोसा किया और मुझे जीवन में कुछ कर दिखाने का पूरा अवसर दिया।इसे दूसरे शब्दों में कहूं तो मुझे काम करने के लिए खुला आसमान दिया, पूरी स्वतंत्रता दी। अपने माता-पिता और अपने राज्य हरियाणा का नाम मैं रोशन कर पाउं तो यह मेरे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार होगा। मेरे माता-पिता मेरे सबसे बड़े प्रेरणा स्रोत हैं। सच भी है कि संघर्ष में अगर अपनों का साथ मिल जाये तो जग भी छोटा लगने लगता है।